ISSN : 0976-8041

Vaishali Institute Research Bulletin No. 27

Editor

Prof. (Dr.) Rishabha Chandra Jain

Research Institute of Prakrit Jainology & Ahimsa, Vaishali
Basokund, Muzaffarpur (Bihar) - 844128, India

विषय-सूची

सम्पादकीय v-viii

1. जैनधर्म : वैदिक धर्म के सन्दर्भ में 1-4
   डॉ॰ श्रीरंजन सूरिदेव
2. तीर्थंकर महावीर तथा अहिंसा : एक तुलनात्मक अध्ययन 5-9
   डॉ॰ संगीता अग्रवाल
3. समतावादी समाज-संरचना में जैन श्रावक व्रतों की भूमिका 11-20
   डॉ. जिनेन्द्र जैन
4. आचार्य कुन्दकुन्द का अनेकान्तदर्शन 21-29
   डॉ. अशोक कुमार जैन
5. आचार्य कुन्दकुन्द : रचनाएं एवं व्यक्तित्व 31-37
   डा. (श्रीमती) सरोज जैन
6. भारतीय मनीषा को आचार्य कुन्दकुन्द का अवदान 39-44
   प्रो॰ अरूण कुमार जैन
7. आचार्य कुन्दकुन्द के साहित्य में व्यवहारनय की स्थिति 45-51
   डॉ॰ ऋषभचन्द्र जैन
8. समयदेशना का कर पान। 53-57
   निज को निज, पर को पर जान॥
   सुरेश जैन (आई.ए.एस.)
9. आचार्य समन्तभद्र का दार्शनिक अवदान 59-75
   डॉ॰ नरेन्द्र कुमार जैन
10. जैनयोग : एक विवेचन 77-83
    प्रो॰ कमलेश कुमार जैन
11. सल्लेखना के दौरान भावविशुद्धि की प्रक्रिया 85-93
    डॉ॰ ऋषभचन्द्र जैन
12. सर्वार्थसिद्धि के आलोक में - मरण और समाधिमरण : 95-112
    स्वरूप और भेद
    डॉ॰ राजेन्द्र कुमार बंसल
13. सम्राट् अशोक के अभिलेखों में निहित आचारपरक शिक्षाएँ 113-121
    डॉ. सत्यनारायण भारद्वाज
14. जैन पुराणों में प्रतिबिम्बित सामाजिक जीवन : एक आदर्श 123-139
    डॉ. राजेन्द्र कुमार बंसल

सम्राट् अशोक के अभिलेखों में निहित आचारपरक शिक्षाएँ

डॉ. सत्यनारायण भारद्वाज*

भारतीय संस्कृति अत्यन्त प्राचीन है। ज्ञान की अविरल धारा का प्रवाह पूर्व वैदिक काल से लेकर अद्यावधि गतिमान है। हमारे देश ने शिक्षा के क्षेत्र में बहुत उन्नति की है लेकिन समय-समय पर हमारे समक्ष विजातीय संस्कृतियों की चुनौती अवश्य खड़ी हुई है। यथा- मौर्यों के पतन के बाद विदेशी शासन, तत्पश्चात् हिन्दू राजाओं के पतन के बाद इस्लामी शासन तथा इस्लामी पतन के बाद अंग्रेजी शासन। इस कालावधि में चले विजातीय शासन के उपरान्त भी हमारी भारतीय संस्कृति की अस्मिता पर कभी संकट नहीं आया। देश-काल की परिस्थितियों के अनुसार कुछ प्रथाएँ आज निरर्थक एवं अप्रासंगिक हैं। अतः इन प्रथाओं को पुनः रूपान्तरित करने की आवश्यकता है। प्राचीन भारतीय संस्कृति में कुछ ऐसे तत्त्व विद्यमान हैं, जिनसे आज की कुछ महत्त्वपूर्ण शैक्षिक समस्याओं का समाधान किया जा सकता है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति, 1986 में स्पष्ट रूप से वर्तमान प्रमुख राष्ट्रीय शैक्षिक समस्याओं को रेखांकित किया गया है। सबके लिए शिक्षा को भारत के भौतिक व आध्यात्मिक विकास की बुनियादी आवश्यकता बताया गया है। इसमें शिक्षा को वह साधन बताया गया है, जिसकी सहायता से संविधान में प्रतिष्ठित समाजवाद, धर्मनिरपेक्षता और लोकतंत्र की प्राप्ति हो सके। इस नीति में कुछ शैक्षिक समस्याएँ इस प्रकार हैं- नैतिक मूल्यों का ह्रास, निरक्षरता, शैक्षिक गुणवत्ता में कमी, जनसंख्या शिक्षा के प्रसार में कमी, पर्यावरणीय शिक्षा में कमी तथा अनुशासनहीनता आदि।

मैंने अपने इस शोधालेख में केवल नैतिक मूल्यों के उन्नयन में अशोक के अभिलेखों में निहित आचारपरक शिक्षाएँ किस प्रकार उपयोगी सिद्ध हो सकती हैं, इस समस्या के संदर्भ में उनका उल्लेख किया है।

भारतीय समाज एक परम्परागत समाज है। परम्परागत शैक्षिक मूल्य आज भी भारतीय समाज में मान्य है लेकिन स्वतंत्रता के बाद प्रचलित शिक्षा प्रणाली में मूल्यों की शिक्षा पर अधिक ध्यान नहीं दिया जा रहा है। आधुनिक परम्परागत शैक्षिक मूल्यों को शिक्षार्थियों में समाहित करने में प्रचलित शिक्षा प्रणाली विफल सिद्ध हो रही है। इसीलिए आज भारतीय समाज में नैतिक मूल्यों का ह्रास दृष्टिगत हो रहा है। इस कारण भ्रष्टाचार और राष्ट्रीयता का संकट जैसी समस्याएँ सामाजिक एकता और राष्ट्रीय अखण्डता के सम्मुख एक चुनौती के रूप में खड़ी हैं। प्रचलित शिक्षा प्रणाली में वैयक्तिक, सामाजिक

* सहायक आचार्य, संस्कृत एवं प्राकृत विभाग, जैन विश्वभारती संस्थान, लाडनूं, राजस्थान।